International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

भारत मे सामाजिक मुद्दों के प्रति महात्मा गांधी के विचारो का अध्ययन

LOKENDRA BAHADUR SINGH
RESEARCH SCHOLAR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR RAJASTHAN

DR AVANISH KUMAR MISHRA
ASSOCIATE PROFESSOR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR RAJASTHAN

सारांश

महात्मा गांधी जी का राजनीतिक के साथ-साथ सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी उनके विचारों और कार्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अपने राजनीतिक आन्दोलनों के साथ-साथ समाज सुधार के लिए भी आन्दोलन चलाए। उन्होंने जातिवाद, साम्राज्यवाद, सम्प्रदायवाद आदि बुराईयों के खिलाफ कडा संघर्ष किया। दक्षिण अफ्रीका में भी गांधी जी ने श्वेत लोगों की रंगभेद की नीति का कडा विरोध किया तथा फिर भारत में आकर भी उन्होंने एक समाज सुधारक के रूप में यहाँ पर प्रचलित अन्याय, अत्याचार व उत्पीडन का घोर विरोध करते हुए उसके खिलाफ कडा संघर्ष किया। दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत में आने पर गांधी जी ने दलितों की मुक्ति के लिए जो कठिन प्रयास किए उससे यह स्पष्ट होता है कि उनका सामाजिक न्याय के साथ गहरा लगाव रहा था।

मुख्यशब्द- महात्मा गांधी, सामाजिक सुधार, राजनीतिक आन्दोलन, सामाजिक न्याय, समाज सुधारक

प्रस्तावना

गांधीवादी विचारधारा ने ऐसे संस्थानों और कार्यप्रणालियों के निर्माण को आकार दिया जहाँ सभी की आवाज और परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट किया जा सकता है। उनके अनुसार, लोकतंत्र ने कमजोरों को उतना ही मौका दिया, जितना ताकतवरों को। उनके स्वैच्छिक सहयोग, सम्मानजनक और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आधार पर कार्य करने के सुझाव को कई अन्य आधुनिक लोकतंत्रों में अपनाया गया। साथ ही, राजनीतिक सहिष्णुता और धार्मिक विविधता पर उनका ज़ोर समकालीन भारतीय राजनीति में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखता है। सत्य, अहिंसा, सर्वोदय और सत्याग्रह तथा उनके महत्त्व से गांधीवादी दर्शन बनता है और ये गांधीवादी विचारधरा के चार आधार हैं।

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

महात्मा गांधी जी का आर्थिक दर्शन देश की आर्थिक समस्याओं (गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी) तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को सूचित करता हैं और यह बताती हैं कि अपने संसाधनों के बल पर इन समस्याओं को किस प्रकार हल किया जाये चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र हो या फिर शहर या राष्ट्र, सभी में व्याप्त आर्थिक समस्याओं का समाधान उन्होंने बड़े सटीक व उचित रूप से प्रस्तुत करके एक सच्चे देश भक्त तथा मानवतावादी का परिचय दिया था। गांधी जी ने जहाँ एक तरफ देश के ग्रामीण क्षेत्रों को अहम बताते हुये ग्राम स्वराज का उल्लेख किया हैं। जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु लघु व कुटीर जैसे उद्योगों पर दृष्टि डाली हैं वही दूसरी तरफ स्वदेशी शब्द का उपयोग करके एक राष्ट्रवादी भावना प्रस्तुत की हैं।

गांधी जी राष्ट्रवादी भावना के साथ-साथ एक उच्च मानवतावादी दृष्टिकोण भी रखते थे इसीलिये उन्होंने अपने आर्थिक विचारों में श्रमिकों की समस्याओं को भी स्थान दिया था। उनका कहना था कि मजदूर अधिनियम या कानून के अभाव में पूंजीपति किस प्रकार श्रमिकों का शोषण करता हैं। श्रमिकों के हितों एवं अधिकारों के संरक्षण के लिये गांधी जी ने श्रम संघों या श्रम यूनियनों की वकालत की थी और न्यूनतम मजदूरी अधिनियम का समर्थन किया था ताकि उनके अधिकारों की सुरक्षा प्रदान की जा सके और समान वेतन व समान कार्य के आधार पर उनको मजदूरी प्रदान करके एक प्रकार का सामाजिक न्याय प्रदान किया जा सके।

जब हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधी जी के आर्थिक विचारों पर दृष्टि डालते हैं तो यह पता चलता हैं कि आज भी उनके विचार भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सटीक व उचित साबित होते हैं। आज ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से जो विकास के अंश दिखाई दे रहे हैं वे उन्हीं के विचारों की देन हैं। एक आदर्श ग्राम की परिकल्पना जिसमें यह कहा गया था कि ग्राम की पाठशाला, बच्चों के लिये उचित शिक्षा की व्यवस्था, स्वच्छ घर व पानी, बिजली, सड़कें, बांध आदि होना चाहिये, सत्य सिद्ध हो रही हैं। शहरों में स्थापित बड़े-बड़े उद्योगों में श्रमिकों के कल्याण व अधिकारों के लिये श्रम संगठनों की स्थापना जिसके माध्यम से श्रमिक उद्योगपतियों से अपनी शर्तें मनवाने के लिये सफल हुये हैं, स्वदेशी, जिसके अन्तर्गत यह कहा गया हैं कि किसी भी वस्तु का उत्पादन स्वयं के द्वारा और अपने उपभोग के लिये करना चाहिये इत्यादि उन्हीं के विचारों की देन हैं। आज स्वदेशी की

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

अवधारणा के अन्तर्गत जो मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रम हमारे सामने प्रकट हो रहे हैं, गांधी जी के द्वारा की गयी पहल का ही नतीजा हैं।

गांधीवादी विचारधारा

- गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई थी।
- गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है।
- यह दर्शन कई स्तरों आध्यात्मिक या धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और सामूहिक आदि पर मौजूद है। इसके अनुसार-
  - आध्यात्मिक या धार्मिक तत्व और ईश्वर इसके मूल में हैं।
  - मानव स्वभाव को मूल रूप से सद्गुणी है।
  - सभी व्यक्ति उच्च नैतिक विकास और सुधार करने के लिये सक्षम हैं।
- गांधीवादी विचारधारा आदर्शवाद पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक आदर्शवाद पर ज़ोर देती है।
- गांधीवादी दर्शन एक दोधारी तलवार है जिसका उद्देश्य सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना है।
- गांधीजी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे- भगवद्गीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया।
  - टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था।

- गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा।

- इन विचारों को बाद में "गांधीवादियों" द्वारा विकसित किया गया है, विशेष रूप से, भारत में विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण तथा भारत के बाहर मार्टिन लूथर किंग जूनियर और अन्य लोगों द्वारा।

"गांधी जी" की नज़र से भारतीय समाज-

- महात्मा गांधी जी का भारत के स्वतंत्रता संग्राम और समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण योगदान था। गांधी जी द्वारा समर्थित विचार उनके दर्शन में निहित हैं।

- निस्संदेह, गांधी जी को एक ऐसे समाज-सुधारक के रूप में देखा जा सकता है जो एक ऐसी नई समाजिक व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रहे थे जहां लोग बिना हिंसा और युद्ध के रह सकें। अपने जीवनकाल में गांधी जी ने महिलाओं,अछूतों और अन्य आर्थिक रूप से वंचित समूहों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया था।

- इसके अतिरिक्त उनके विचारों ने लैंगिक समानता, लोगों में एकता और छुआछूत, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध और बाल विवाह निषेध जैसी अमानवीय प्रथाओं के उन्मूलन को बढ़ावा दिया।

व्यक्ति और समाज

- गांधी जी की एक ऐसी नई सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की संकल्पना थी जो शोषण और अत्याचार से मुक्त हो। उन्होंने सर्वोदय समाज और शोषण विहीन समाज जैसी संस्थाओं की स्थापना कर इस लक्ष्य के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया, जिसका उद्देश्य लोगों की शोषण से सुरक्षा प्रदान करना था। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो, उसे व्यक्तिगत विकास के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

- हालांकि, वह केवल अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख के विचार से संतुष्ट नहीं थे। इसके स्थान पर गांधी जी ने समाज के सभी वर्गों के विकास और समृद्धि की वकालत की। गांधी जी के अनुसार लोगों की समग्र भलाई जिसे स्वराज के रूप में जाना जाता है, प्रत्येक व्यक्ति की भलाई पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति केवल तभी समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं जब समाज के अंदर उन्हें स्वतंत्रता और शांति प्राप्त हो।

- हालांकि,गाँधी जी केवल भौतिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने के विरूद्ध थे,क्योंकि गाँधी जी का मानना था कि अत्यधिक भौतिक समृद्धि से विभिन्न समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गांधी जी का आदर्श इस धारणा के इर्द-गिर्द केंद्रित था कि हमारी सभ्यताओं, संस्कृति और स्व-शासन (स्वराज) की उन्नति हमारी इच्छाओं को पूर्ण करने और अपनी इच्छाओं को बढ़ाने पर निर्भर नहीं है, बल्कि आत्म-संयम और आत्म-त्याग का अभ्यास करने पर निर्भर करती है।

महात्मा गांधी के सामाजिक विचार

गांधी जी का सम्पूर्ण सामाजिक दर्शन उनके नैतिक समाज की अवधारणा पर आधारित हैं। गांधी जी का मानना था कि जब तक स्वस्थ्य समाज नहीं बनेगा, तब तक अच्छी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाएँ विकसित नहीं हो सकेगी। राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक प्रगति और स्वस्थ्य समाज परस्पर एक दूसरे से संबंधित हैं। हमारे लिए इतना ही पर्याप्त नही हैं कि हमारा समाज बहुत प्राचीन हैं तथा विश्व का पथ प्रदर्शक रहा हैं। इससे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि हम वर्तमान समाज को आदर्श समाज बनाएँ। वर्तमान भारतीय तथा पाश्चात्य समाज बुराइयों और आन्तरिक कमजोरियों से ग्रसित हैं। उन्होंने उन बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयत्न किए।

वर्ण व्यवस्था

गांधी जी भारतीय संस्कृति के पुजारी थे। पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण उन्हें पसंद

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

नहीं था। भारत में प्रचलित वर्ण-व्यवस्था का उन्होंने समर्थन किया हैं। उनके अनुसार सभी व्यक्तियों को अपने पैतृक व्यवसाय ही अपनाने चाहिए, समाज में केवल चार वर्ण होने चाहिए-- ब्राह्राण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। एक वर्ग में उत्पन्न व्यक्ति को अपना ही कार्य करना चाहिए। गाँधीजी ने वर्ण व्यवस्था को जन्मजात नहीं अपितु कर्मगत माना हैं। अर्थात् जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा, उसे वैसे ही वर्ग में रखा जाएगा। 'गीता' के अनुसार वर्ण व्यवस्था जन्म पर नही बल्कि कर्म पर आधारित हैं। यह वर्ण विभिन्न जातियाँ नही, विभिन्न वर्ग हैं। विभिन्नता केवल कार्य के कारण हैं। सभी वर्णों का महत्व समान हैं।

अस्पृश्यता का अंत

महात्मा गांधी अस्पृश्यता को भारतीय के लिए एक कलंक मानते थे। उनका मत था कि अस्पृश्यता पापमूलक हैं तथा यह किसी भी धर्म का अंश नही हो सकती। गांधी जी अस्पृश्यता को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। उन्होंने अछूतों को हरिजन कहा तथा कहा की अस्पृश्यता निवारण के बिना, स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं हैं। अस्पृश्यता को गांधी जी ने कृत्रिम अथवा बनावटी माना। इसका व्यक्ति के नैतिक या बौद्धिक विकास से कोई संबंध नहीं हैं। यह हिन्दू समाज की विकृति हैं। अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए वे हरिजन के मंदिर प्रवेश के समर्थक थे। वर्तमान मे यह मुद्दा इतना गंभीर नही है, पर जब गांधी जी ने स्वतंत्रता के पहले प्रयत्न किए तब यह महत्वपूर्ण मुद्दा था। गांधी जी ने सार्वजनिक स्थानों पर हरिजनों को स्थान दिलाया। उन्होंने अंग्रेजों की उस कुटिल चाल को समाप्त किया जिसके अनुसार हरिजनों को शेष हिन्दू समाज से अलग करने की कोशिश की गई थी। जब अंग्रेजी सरकार ने 1932 में साम्प्रदायिक निर्णय के अनुसार हरिजनों के लिए अलग निर्वाचन की घोषणा की तो गांधी जी ने इसका विरोध किया और आमरण अनशन प्रारंभ किया। परिणामतः अंग्रेजों ने इस निर्णय को वापिस लिया। गांधी जी ने हरिजन बस्तियों में रहना प्रारंभ किया। उन्होंने अछूतों में आत्मसम्मान के भाव विकसित करने की कोशिश की। उन्होंने हिन्दुओं को सलाह दी कि हरिजन बालकों को अपने घर रखें तथा उनका लालन-पालन अपने परिवार के अन्य बच्चों के समान करें,

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

गांधी जी ने हरिजनों को भी बुरी आदतें छोड़ने की सलाह दी।

महिला उत्थान के कार्य

महिलाओं के प्रति व्यक्ति और समाज का व्यवहार तथा महिलाओं की भारतीय समाज में स्थिति मध्यकाल से ही खराब रही हैं। गांधी जी ने महिलाओं के लिए कार्य किए। वे इस तर्क को अस्वीकार करते थे कि महिलाओं का स्थान समाज में पुरूषों से नीचा होता हैं। गांधी जी ने स्त्री तथा पुरुष दोनों को समान दर्जा दिया। इतना ही नहीं वे नारी को चरित्र की दृष्टि से उच्च मानते थे तथा उसे त्याग, ममत्व, करूणा और ज्ञान की मूर्ति मानते थे। उनका विश्वास था कि अहिंसा के नैतिक शस्त्र का प्रयोग पुरुष की तुलना में महिलाएं अधिक क्षमता और दक्षता के साथ कर सकती हैं, क्योंकि उनमें त्याग और प्रेम की शक्ति अधिक होती हैं।

गांधी जी ने पर्दा-प्रथा का विरोध किया। वे मानते थे कि पर्दे से चरित्र की पवित्रता नहीं आती हैं। उन्होंने महिलाओं को हीन भावना त्यागने का आह्वान किया। गांधी जी ने महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का समर्थन किया। वे महिला मताधिकार के समर्थक थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर जोर दिया।

महात्मा गांधी ने बाल विवाह का विरोध किया। वे बाल विवाह में शारिरिक और नैतिक दोनों बुराइयों को मानते थे। बाल विवाह के कारण ही समाज में कई बाल विधवाएँ हैं। वे विधवाओं के पुनर्विवाह के समर्थक थे। उनकी मान्यता थी कि स्वेच्छापूर्वक विधवा रहना हिन्दू धर्म की अमूल्य देन हैं और जबरन विधवा रखना अभिशाॅप हैं। विवाह को गांधी जी एक पवित्र संस्कार मानते थे। विवाह का उद्देश्य भोग भोगना नहीं, अपितु प्रजनन हैं। गांधी जी अन्तर्जातीय और अन्तर्सम्प्रदाय विवाह के समर्थक थे। गांधी जी ने दहेज प्रजा का विरोध किया।

बिनियादी शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में गांधी जी का महत्वपूर्ण योगदान हैं। उनका विचार था कि शिक्षा का उद्देश्य शरीर, आत्मा व मस्तिष्क का समन्वित विकास है और इस दृष्टि से वे अंग्रेजों द्वारा भारत में स्थापित शिक्षा पद्धित

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

को बहुत अधिक दोषपूर्ण मानते थे। उनका विचार था कि यह पद्धित युवकों का शरीरिक, बौद्धिक या आत्मिक किसी प्रकार का विकास करने में असमर्थ हैं। शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा होने के कारण विद्यार्थियों का अहित होता है। देश की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए उनके द्वारा एक नवीन शिक्षा प्रणाली का सुझाव दिया गया जो 'बुनियादी शिक्षा' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस शिक्षा प्रमाणी की विशेषताएं निम्नलिखित हैं--

1. शिक्षा के अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को मूलरूप में कोई न कोई दस्तकारी सिखायी जानी चाहिए और सब विषयों की शिक्षा उस दस्तकारी के द्वारा दी जानी चाहिए जिसे सहसंबंध का सिद्धांत कहते हैं।

2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।

3. शिक्षा स्वावलम्बी हो अर्थात् विद्यार्थी जिस दस्तकारी के आधार पर शिक्षा प्राप्त करते हैं उस दस्तकारी से विद्यार्थी जीवन में और उसके बाद भी अपना भरण-पोषण कर सकें।

4. गांधी जी द्वारा शिक्षा में चरित्र निर्माण पर बहुत अधिक बल दिया गया था।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के सामाजिक-आर्थिक सिद्धांतों के अपने अध्ययन के अंत पर आ गए हैं। अब सात दशक होने जा रहे हैं जब हमने गांधी, 'महात्मा', 'राष्ट्रपिता' को अपनी दुनिया से निष्कासित कर दिया है। उनसठ साल बीतने के साथ, गांधीवादी विचार, या गांधीवाद, हमारे लिए अधिक से अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है, क्योंकि हम गांधीवादी को छोड़कर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी समस्याओं को किसी न किसी तरह से हल करने की कोशिश में बुरी तरह असफल हो गए हैं। . निःसंदेह हमने रिचर्ड एटनबरो की गांधी (1992) और विधु विनोद चोपड़ा की लगे रहो ममनाभाई (2006) में सेल्युलाइड पर मनोरंजन के रूप में उनके विचारों का जश्न केवल अपना गौरव बढ़ाने के लिए और, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, बॉक्स ऑफिस में संग्रह के लिए मनाया है। शिक्षाशास्त्र की दृष्टि से यहाँ भारत और वहाँ अनेक विदेशी देशों में उनके कुछ विचारों पर वर्तमान शोध

और अनुप्रयोग सहित कार्य चल रहे हैं। एक बात स्पष्ट है कि लोग गांधीजी और उनके विचारों और कार्यों को न तो भूले हैं और न ही शायद भूल सकते हैं, कुछ सहमत हैं और कुछ दुखी हैं। गौरतलब है कि हाल ही में घाना में एक कुख्यात घटना घटी. दोनों देशों के बीच घनिष्ठ संबंधों के प्रतीक के रूप में भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा जून, 2016 में अकरा में घाना विश्वविद्यालय परिसर में गांधी की एक प्रतिमा का अनावरण किया गया था। व्याख्याताओं और छात्रों के एक समूह ने भारतीय राष्ट्रवादी नेता की प्रतिमा स्थापित होने के तुरंत बाद उसे हटाने के लिए अभियान शुरू किया। उन्होंने तर्क दिया कि गांधी ने अफ्रीकियों के बारे में नस्लवादी टिप्पणियां की थीं और अकरा परिसर में मूर्तियां अफ्रीकी नायकों की होनी चाहिए। घाना सरकार ने कहा कि वे अभियान से पैदा हुई कटुता से चिंतित हैं और उन्होंने प्रतिमा की सुरक्षा सुनिश्चित करने और विवाद से बचने के लिए इसे स्थानांतरित करने का फैसला किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अहलूवालिया, बी.के., एम.के. गांधी - चुनिंदा भाषण, नई दिल्ली, सागर प्रकाशन, 1969।

2. एंड्रयूज, सी.एफ., महात्मा गांधी: उनका जीवन और विचार, नई दिल्ली, राधा प्रकाशन, 1988।

3. बाकियानंदन, जोसेफ फ्रांसिस, लव इन द लाइफ एंड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, नई दिल्ली, स्टर्लिंग प्रकाशन, 1991।

4. बख्शी, एस.आर., गांधी और उनके सामाजिक विचार, नई दिल्ली, मानदंड प्रकाशन, 1986।

5. बत्रा, शक्ति, द किंटेसेंस ऑफ गांधी इन हिज ओन वर्ड्स, नई दिल्ली, मधु मुस्कान प्रकाशन, 1984।

6. बौराई, हिमांशु, गांधीवादी दर्शन और द न्यू वर्ल्ड ऑर्डर। नई दिल्ली, अभिजीत प्रकाशन, 2004।

7. बेताई, रमेश एस., गीता और गांधीजी, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, 2002।

8. बोस, एनिमा., महात्मा गांधी: एक समकालीन परिप्रेक्ष्य, भारत, बी.आर. प्रकाशन निगम, 1977.

9. भारती, के.एस., इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एमिनेंट थिंकर्स: द पॉलिटिकल थॉट ऑफ महात्मा गांधी, नई दिल्ली, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 1988।

10. भोले, एल.एम., गांधीवादी सामाजिक-आर्थिक विचार पर निबंध, दिल्ली, शिप्रा प्रकाशन, 2000।

11. बिस्वास, एस.सी., गांधी: सिद्धांत और व्यवहार: सामाजिक प्रभाव और समकालीन प्रासंगिकता, भारत, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, 1969।

12. बोस, निर्मल कुमार, गांधी से चयन (गांधी के विचारों का विश्वकोश), अहमदाबाद, नवजीवन मुद्रालय, 1950।